डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 07.08.2020 Page No.:

विषय - संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश

गद्यांश व्याख्या

न ह्येवं विधमपरमपरिचितमिह जगति किञ्चिदस्ति, यथेयमनार्या । लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते । दृढगुणपाशसन्दाननिष्पन्दी कृतापि नश्यति ।

सान्वयार्थ - (न ह्येवं विधममरमपरिचिमिह जगति किञ्चिदस्ति) निश्चय ही इस संसार में कोई दूसरी वस्तु ऐसी अपरिचित (परिचय के सम्बन्ध की उपेक्षा करने वाली) नहीं है (यथेयमनार्या) जैसी कि यह दुष्टा है। क्योंकि (लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते) प्राप्त हो जाने पर भी दुःखपूर्वक पालन की जाती है (संभाली जाती है)। (दृढगुणपाशसन्दान निष्पन्दी कृतापि नश्यति) गुणों के दृढ बन्धन से निश्चल की हुई भी लुप्त हो जाती है।

भावार्थ - परिचय से सौहार्द्र उत्पन्न होता है किन्तु यह आचार भ्रष्टा (अनार्या) लक्ष्मी उससे सर्वथा निरपेक्ष है। अतः घनिष्ठतम परिचय के अनन्तर भी अपरिचित ही बनी रहती है। यथाकथञ्चित् मिल जाये तो भी इसका पालन करना अर्थात् इसे स्थिर रखना कठिन है। ठीक ही कहा है - 'श्रीर्लब्धा प्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम' (मुद्रा० 3.5)। गुणरूपी दृढपाशों में मजबूती से बाँधने पर भी अन्य पक्ष का

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough." - Rabindranath Tagore

Scanned with CamScanner

आश्रय लेने से अदृष्ट हो जाती है।
यहाँ गुणों से तात्पर्य सन्धि, विग्रह आदि
षाड्गुण्य अर्थात् राजनीति के छः गुणों व अंगों
के प्रयोग से है।

सन्धिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च।
द्वैधीभावं संश्रयं च षड्गुणांश्चिन्तयेत् सदा॥
मनुस्मृति 7.160॥

इन गुणों की दृढता से तात्पर्य है - इनका
सोच समझकर ऐसा प्रयोग करना कि उस
प्रयोग में किसी परिवर्तन की गुंजाइश न रहे।

पदव्याख्या - अनार्या - न आर्या (नञ्)।
आराद् (आराद् दूरसमीपयोः) याति इति आर्यः =
दुराचार से दूर तथा सदाचार के समीप जानेवाला
अथवा अर्तुं योग्यः आर्यः (ऋ + ण्यत् 'ऋहलोर्ण्यत्')
ज्ञान का अधिकारी। लब्धा = लभ् + क्त + टाप्।
परिपाल्यते - परि + पाल् + कर्मणि यक् लट् प्र०पु०ए०।
दृढगुणपाशसन्दान निष्पन्दीकृता - गुणा एव पाशा
गुणपाशाः (क० धा०) गुणपाशा एव सन्दानं (बन्धनं)
गुणपाशसन्दानम् (क० धा०) दृढं यत्
गुणपाशसन्दानं तद् दृढगुणपाशसन्दानम्
(क० धा०) तेन निष्पन्दी कृता
नि + स्पन्द् + च्वि कृ + क्त + टाप्
(तृ० तत्पु०)। इति।